४. शिवाजी महाराज से पूर्व का महाराष्ट्र

सत्रहवीं शताब्दी के प्रारंभ में महाराष्ट्र का अधिकांश प्रदेश अहमदनगर के निजामशाह और बीजापुर के आदिलशाह के आधिपत्य में था । मुगलों का खान्देश में प्रवेश हो चुका था । उनका उद्देश्य दक्षिण में अपना सत्ता विस्तार करना था । कोकण के तटों पर अफ्रीका से आए हुए सिद्दी लोगों ने अपनी बस्तियाँ बसाई थीं । इसी कालखंड में यूरोप से आए हुए पुर्तगाली, अंग्रेज, फ्रांसीसी और डच आदि विदेशी सत्ताओं के बीच समुद्री प्रतिद्वंद्विता और पारस्परिक संघर्ष प्रखर होता जा रहा था । उनके बीच व्यापार के लिए बाजार पर अपना नियंत्रण पाने के लिए होड़ मची थी । पश्चिमी तट पर गोआ और वसई में पुर्तगालियों ने पहले से ही अपना राज्य स्थापित किया था तो अंग्रेजों, डचों और फ्रांसीसियों ने व्यापारिक कंपनियों के माध्यम से गोदामों के रूप में चंचुप्रवेश किया था । ये सभी सत्ताएँ एक-दूसरे की शक्ति का अनुमान करती हुई स्वयं को सुरक्षित रखने का प्रयास कर रही थीं । साथ ही; जितना संभव होगा; उतना अपना वर्चस्व बनाए रखने की योजना में भी लगी हुई थीं । उनके इस पारस्परिक संघर्ष के कारण महाराष्ट्र में अस्थिरता और असुरक्षितता निर्माण हुई थी । यूरोप के इन अलग-अलग लोगों को उनके टोपों के कारण 'टोपकर' अर्थात 'टोपावाला' कहते थे ।

शिवाजी महाराज से पूर्व के समय में लोगों की बस्ती, प्रजा और शासक के बीच अधिकारी, बाजार-हाट, कारीगर आदि सेतु का कार्य करते थे । इनका स्वरूप समझने के लिए गाँव (मौजा), कस्बा (कसबा) और परगना जैसे भौगोलिक स्थानों का परिचय होना आवश्यक है । कई गाँवों को मिलाकर परगना बनता था । सामान्यत: परगना के मुख्य स्थान को कस्बा कहते थे । कस्बे की अपेक्षा छोटे स्थानवाले गाँव को मौजा कहते थे । अब हम गाँव, कस्बा और परगना का क्रमश: संक्षिप्त परिचय प्राप्त करेंगे ।

गाँव (मौजा) : अधिकांश लोग गाँव में ही रहते थे । गाँव को मौजा भी कहते थे । गाँव का प्रमुख पाटिल (मुखिया) होता था । लोग गाँव की अधिकाधिक भूमि को उपज के लिए उपयोग में लायें; इसके लिए गाँव का मुखिया अर्थात पाटिल प्रयास करता । गाँव में झगड़ा-विवाद होने पर शांति बहाल करने का काम पाटिल करता था । उसके कार्य में कुलकर्णी सहायता करता । जमा राजस्व का अभिलेख अथवा लिखा-पढ़ी रखने का काम कुलकर्णी करता था । गाँव में विभिन्न काम करनेवाले श्रमिक (परजा) थे । उनको व्यवसायों से संबंधित अधिकार वंश परंपरा से प्राप्त होते थे । गाँव में श्रमिक अपनी सेवाएँ देते थे और उसके बदले में उन्हें किसान से अनाज का कुछ हिस्सा मिल जाता । उस हिस्से को परजा (बलुत) कहते थे ।

कस्बा : एक बड़े गाँव को कस्बा कहते थे । सामान्यत: कस्बा परगना का मुख्य स्थान होता था । जैसे - इंदापुर परगना का मुख्य स्थान इंदापुर कस्बा, वाई परगना का मुख्य स्थान वाई कस्बा । गाँव की तरह ही कस्बे में भी मुख्य व्यवसाय खेती ही होता था। वहाँ बढ़ई, लुहार आदि कुशल श्रमिक (कारीगर) भी होते थे। कस्बे से जुड़े बाजार पेठ (हाट) भी होते थे। शेटे और महाजन बाजार पेठ के माफीदार अथवा जागीरदार प्रशासक होते थे । ऐसा नहीं है कि प्रत्येक गाँव में बाजार पेठ होते ही थे लेकिन गाँव में बाजार पेठ बसाने का काम शेटे-महाजनों का होता था। इसके लिए उन्हें सरकार द्वारा जमीन और गाँववालों से कुछ अधिकार प्राप्त होते थे । बाजार पेठ का हिसाब-किताब रखने का काम महाजन देखता था ।

क्या तुम जानते हो ?

वीरमाता जिजाबाई के आदेश पर पुणे के समीप पाषाण में एक पेठ (हाट) बसाई गई थी। उसे 'जिजापुर' कहते थे । मालपुरा, खेलपुरा, परसपुरा, विठापुरा ये भी औरंगाबाद में बसाई गई - नई पेठें हैं । ये नई पेठें मालोजी, खेलोजी, परसोजी और विठोजी के नामों पर बसाई गई थीं । 'खेड़' से जुडा 'शिवापुर' शिवाजी महाराज के नाम पर बसाई गई पेठ थी ।

इसे समझें

दो गाँव स्वतंत्र हैं; यह दर्शाने के लिए 'बुद्रुक' और 'खुर्द' शब्दों का प्रयोग किया जाता है । मूल गाँव 'बुद्रुक' और नया गाँव 'खुर्द' होता है । जैसे – वड़गाँव बुद्रुक और वड़गाँव खुर्द ।

परगना : कई गाँवों को मिलाकर परगना बनता था। फिर भी सभी परगनों में गाँवों की संख्या समान नहीं होती थी । जैसे – पुणे परगना । यह बड़ा परगना था । इसमें २९० गाँव थे । चाकण परगने में ६४ गाँव थे । शिरवल परगना छोटा था । इसमें ४० गाँव थे । देशमुख और देशपांडे परगना के माफीदार अर्थात वतनदार अधिकारी होते थे । परगना के पाटिलों (मुखिये) का प्रमुख देशमुख होता था । गाँव के स्तर पर जो कार्य पाटिल करता था; वही कार्य परगना के स्तर पर देशमुख करता था । इसी तरह परगाना के सभी कुलकर्णियों का प्रमुख देशपांडे होता था । गाँव के स्तर पर जो कार्य कुलकर्णी करता था; वही कार्य परगना के स्तर पर देशपांडे करता था । ये माफीदार अर्थात वतनदार अधिकारी प्रजा और सरकार के बीच सेतु अथवा पुल का काम करते थे ।

परगना के गाँवों पर कभी कोई संकट आता अथवा अकाल जैसी स्थिति निर्माण हो जाती तो प्रजा की माँगों को सरकार के सम्मुख रखने का काम ये वतनदार अथवा माफीदार अधिकारी करते । कभी-कभी ये अधिकारी अपने अधिकारों का दुरुपयोग करते। कभी वे प्रजा से अधिक पैसा वसूल करते तो कभी प्रजा से इकट्ठा की गई राशि को सरकार के पास जमा करने में विलंब करते । ऐसी स्थिति में प्रजा त्रस्त हो जाती ।

क्या तुम जानते हो ?

वतन अरबी शब्द है तथा महाराष्ट्र में यह शब्द वंश परंपरा द्वारा और स्थायी रूप में उपभोग की जानेवाली भू-राजस्व (लगान) मुक्त जमीन के अर्थ में प्रयुक्त होता है ।

अकाल का संकट : वर्षा के जल पर खेती निर्भर करती है । यदि वर्षा न हो तो खेत में फसल नहीं आती। फलत: अनाज के दाम बढ़ जाते । लोगों को अनाज मिलना दूभर हो जाता । पशुओं को चारा न मिलता । पानी की प्रखर कमी निर्माण हो जाती। लोगों के लिए गाँव में रहना असह्य हो जाता । लोग गाँव छोड़कर चले जाते । वे दर-दर भटकने के लिए विवश हो जाते । प्रजा के लिए अकाल बहुत बड़ा संकट बन जाता ।

ऐसा ही भयानक अकाल महाराष्ट्र में पड़ा था । इसका वर्णन यों मिलता है – यह अकाल ई.स.१६३० में पड़ा । इस अकाल ने लोगों में हाहाकार मचा दिया । अनाज की भयंकर कमी उत्पन्न हुई । रोटी के टुकड़े के लिए लोग स्वयं को बेचने के लिए तैयार हुए लेकिन खरीदनेवाला कोई नहीं था । परिवार उजड़ गए । ढोर-डंगर मर गए । खेती नष्ट हुई । उद्योग-धंधे चौपट हो गए । लेन-देन रुक गया । लोग देश निकाला हो गए । जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया था । उसे पटरी पर लाना बहुत बड़ी चुनौती थी ।

वारकरी पंथ का कार्य : समाज पर अंधविश्वास और कर्मकांड का बड़ा प्रभाव था । लोग भाग्यवाद के अधीन हो गए थे । उनकी प्रयत्नशीलता कम हो गई थी । जनता की हालत बड़ी खस्ता थी । ऐसी स्थिति में समाज में चेतना निर्माण करने का कार्य महाराष्ट्र के वारकरी पंथ ने किया ।

महाराष्ट्र में संत नामदेव, संत ज्ञानेश्वर से यह संत परंपरा प्रारंभ हुई और समाज के विभिन्न वर्गों से आए हुए संतों ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया । इस संत परंपरा में समाज के सभी वर्गों के लोगों का समावेश था । जैसे – संत चोखा मेला, संत गोरोबा, संत सावता, संत नरहरि, संत सेना, संत शेख महंमद आदि । इसी तरह; इन संतों में संत चोखोबा की पत्नी संत सोयरा और बहन संत निर्मलाबाई, संत मुक्ताबाई, संत जनाबाई, संत कान्होपात्रा, संत बहिणाबाई सिऊरकर आदि महिलाएँ भी थीं । इस संत आंदोलन का केंद्र पंढरपुर था । इन संतों के देवता श्री विठ्ठल थे । पंढरपुर में चंद्रभागा नदी के तट पर ये सभी संत और वारकरी इकट्ठे होते । भक्तिसागर में सराबोर हो जाते । वहाँ भजन, कीर्तन और सहभोज (काला) के माध्यम से समता का प्रसार होता था ।

संत नामदेव

संत नामदेव : वारकरी संप्रदाय में ये सर्वश्रेष्ठ संत माने जाते हैं । वे कुशल संगठक और उत्तम कीर्तनकार भी थे । कीर्तन के माध्यम से उन्होंने सभी जाति-वर्गों के स्त्री-पुरुषों को एकत्रित कर उनमें समता की भावना जागृत की । **'नाचू कीर्तनाचे रंग । ज्ञानदीप लावू जगी ।।'** संसार में ज्ञान और भक्ति का दीप जलाने की उनकी यह प्रतिज्ञा थी । उनके अभंग (सबद) रचनाएँ प्रसिद्ध हैं । उनकी सीख का प्रभाव अनेक संतों और सामान्यजन पर पड़ा । संत नामदेव अपने विचारों का प्रसार करते हुए पंजाब गए। उनके लिखे पद 'गुरु ग्रंथसाहिब' ग्रंथ में समाविष्ट हैं । उन्होंने भागवत धर्म का संदेश गाँव-गाँव में प्रचारित करने का कार्य किया । उन्होंने पंढरपुर में श्री विठ्ठल के महाद्‌वार के सम्मुख संत चोखामेला की समाधि का निर्माण करवाया । उनका यह कार्य अविस्मरणीय है ।

संत ज्ञानेश्वर : संत ज्ञानेश्वर वारकरी संप्रदाय के विख्यात संत थे । उन्होंने संस्कृत ग्रंथ 'भगवद्‌गीता' का मराठी में टीका ग्रंथ लिखा । इस ग्रंथ का नाम 'ज्ञानेश्वरी' हैं । इसे 'भावार्थ दीपिका' भी कहते हैं । साथ ही उन्होंने 'अमृतानुभव' ग्रंथ की रचना की । उन्होंने अपने ग्रंथों और अभंगों (सबद) द्‌वारा भक्तिमार्ग का महत्व बताया । उन्होंने ऐसा आचरण धर्म बताया; जो आचरण सामान्यजन कर सकते हैं । वारकरी संप्रदाय को धर्म की प्रतिष्ठा प्राप्त करा दी । उनका जीवन अत्यंत प्रतिकूल परिस्थिति में बीता परंतु उन्होंने अपने मन का संतुलन नहीं खोया और कटुता भी नहीं रखी । ज्ञानेश्वरी में लिखित 'पसायदान' उदात्त संस्कार करता है । संत ज्ञानेश्वर के भाई संत निवृत्तिनाथ और संत सोपानदेव तथा बहन मुक्ताबाई की काव्यरचनाएँ प्रसिद्ध हैं ।

संत ज्ञानेश्वर

संत एकनाथ : महाराष्ट्र में चले भक्ति आंदोलन के ये महान संत थे । उनका साहित्य विपुल और विविध प्रकार का है । इस साहित्य में अभंग (सबद), गौलणी, भारुड आदि का समावेश है । उन्होंने भागवत धर्म को सरल और विस्तार में रचा और समझाया । रामकथा के माध्यम से भावार्थ रामायण में लोकजीवन को चित्रित किया है । उन्होंने संस्कृत ग्रंथ भागवत में उल्लिखित भक्ति का अर्थ मराठी में स्पष्ट किया । उनके अभंगों में अपनापन का भाव पाया जाता है । परमार्थ अथवा ईश्वर प्राप्ति के लिए घर-गृहस्थी त्यागने की आवश्यकता नहीं; इसे उन्होंने स्वयं के आचरण द्‌वारा सिद्‌ध कर दिखाया । वे सच्चे अर्थ में लोकशिक्षक थे । उनका मानना था कि अपनी मराठी भाषा किसी भी भाषा की तुलना में कम श्रेष्ठ नहीं है। **'संस्कृत वाणी देवे केली । तरी प्राकृत काय चोरापासूनि झाली?'** इन शब्दों में उन्होंने संस्कृत पंडितों को फटकारा । उन्होंने अन्य धर्मों का तिरस्कार करनेवालों की कड़े शब्दों में आलोचना की ।

संत एकनाथ

संत तुकाराम : संत तुकाराम पुणे के समीप देहू गाँव में रहते थे । उनकी अभंग रचनाएँ मधुर और प्रासादिक हैं । उनके अभंगों (सबदों) को श्रेष्ठ कवित्व की गरिमा प्राप्त है । संत तुकाराम द्‌वारा रचित 'गाथा' ग्रंथ मराठी भाषा की अमूल्य थाती है ।

वे त्रस्त और दुखी लोगों में ईश्वर को देखने और पाने को कहते हैं । वे कहते हैं, **''जे का रंजले गांजले। त्यांसी म्हणे जो आपुले । तोचि साधु ओळखावा । देव तेथेचि जाणावा ।''** उन्होंने अपने इसी सिद्‌धांत के कारण लोगों को दिए हुए कर्ज के

संत तुकाराम

ऋणपत्र इंद्रायणी नदी में डुबो दिए तथा अनेक परिवारों को ऋणमुक्त कर दिया । उन्होंने समाज में व्याप्त आडंबर-पाखंड और अंधविश्वास की कड़े शब्दों में आलोचना की । वे भक्ति के साथ नैतिकता को जोड़ने पर बल देते थे। **'जोडोनिया धन उत्तम व्यवहारे। उदास विचारे वेच करी ।।'** इन पंक्तियों में उनके विचारों का सार बताया जा सकता है । समाज के कुछ तथाकथित कर्मकांडी और कट्टर लोगों ने उनके द्‌वारा किए जाने वाले जनजागृति के कार्य को विरोध जताया । वास्तव में उन्हें अभंग रचने का कोई अधिकार ही नहीं है; इस प्रकार ललकारते हुए कट्टर लोगों ने उनकी काव्य सामग्री को इंद्रायणी नदी में डुबोकर नष्ट करने का प्रयास किया । संत तुकाराम ने लोगों के विरोध का बड़े धैर्य के साथ सामना किया ।

संत तुकाराम के शिष्य एवं सहयोगी सभी जाति-वर्गों के थे । नावजी माली, गवनरसेठ वाणी, संताजी जगनाडे, शिवबा कासार, बहिणाबाई सिऊरकर, महादजीपंत कुलकर्णी आदि कुछ नाम हैं । गंगारामपंत मवाल और संताजी जगनाड़े ने संत तुकाराम के अभंग लिखकर रखे हैं और यह उनका महत्त्वपूर्ण योगदान कहा जा सकता है ।

संतों के कार्यों का परिणामफल : सभी संतों ने लोगों को समता का संदेश सुनाया । मानवता और मानवता धर्म का पाठ पढ़ाया । एक-दूसरे के प्रति प्रेम भाव रखो, एक बनो, एक रहो; यह उनकी सीख थी । उनके कार्यों के फलस्वरूप लोगों में जागृति उत्पन्न हुई । मानवनिर्मित संकट हो, अकाल हो अथवा अलग-अलग प्रकार की प्राकृतिक आपदाएँ हों; इनकी चिंता न करते हुए मनुष्य को किस प्रकार जीना चाहिए; इन बातों का संतों के द्‌वारा किया गया उपदेश लोगों के लिए बहुत बड़ा अवलंब बना। संतों के इन कार्यों से महाराष्ट्र की जनता में आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ ।

समाज में धर्म का अध:पतन हुआ था; इस स्थिति में संतों ने आगे बढ़कर समाज का रक्षण किया। धर्म के वास्तविक अर्थ और मर्म से परिचित कराया । लोगों के बीच रहकर; उनके सुख-दुख को समझकर भक्तिमार्ग की प्रेरणा दी । ऐसे समय समाज के कुछ कट्टर और दकियानूसी लोगों ने उनको विरोध किया । संत यह मानते थे कि उनके इस विरोध को सहना संतों के कर्तव्यों का ही एक हिस्सा है । **'तुका म्हणे तोचि संत। सोशी जगाचे आघात ।।'** इन शब्दों में संत तुकाराम ने सच्चे संत के लक्षण बताए हैं ।

धर्मशास्त्री और पंडितों ने धर्म को कठिन और जटिल भाषा में व्याख्यायित किया । संतों ने धर्म को सामान्य जनता की भाषा में उतारा । प्रतिदिन की बोलचाल की भाषा में ईश्वर की आराधना की । उनका मानना था - ईश्वर के सम्मुख सभी समान हैं। हमें अपने रंग-रूप और जाति के अहंकार को दूर कर एक-दूसरे को 'ईश्वर की संतान' के रूप में देखना चाहिए; यह सीख उन्होंने समाज को दी । इन सभी संतों की यह विशेषता रही कि भक्ति करते हुए उन्होंने अपने नित्यकर्मों का त्याग नहीं किया । उन्होंने अपने-अपने कर्मों में ईश्वर के दर्शन किए । संत सावता महाराज ने कहा - **'कांदा मुळा भाजी । अवघी विठाई माझी ।।'** यद्‌यपि उनका यह कथन खेती के काम के संदर्भ में है; फिर भी वह संतों के दैनिक जीवन के अन्य कार्यों के लिए भी सटीक जान पड़ता है । संत अपने-अपने कार्य-व्यवसाय करते हुए भक्ति, उपदेश और भक्तिपदों का निर्माण करते रहे । उन्होंने समाज का नैतिक बोध विकसित किया ।

चलो, चर्चा करें

पंढरपुर की वारी के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करो तथा निम्न बिंदुओं पर विचारविमर्श करो:

- वारकरी किस महीने में वारी को जाते हैं ।
- वारी के नियोजन का स्वरूप कैसा होता है?

रामदास स्वामी : रामदास स्वामी मराठवाडा के जांब गाँव में रहते थे । उन्होंने बल की उपासना का

महत्त्व बताया । **'मराठा तितुका मेळवावा । महाराष्ट्र धर्म वाढवावा ।'** उनके द्‍वारा दिया गया यह संदेश विख्यात है। उन्होंने दासबोध, करुणाष्टके, मनाचे श्लोक जैसी साहित्यिक

रामदास स्वामी

कृतियों के माध्यम से जनता को व्यावहारिक शिक्षा के पाठ पढ़ाए । जन आंदोलन और जन संगठन का महत्त्व बताया । समर्थ संप्रदाय की स्थापना की । चाफल नामक स्थान इस संप्रदाय का केंद्र था । उन्होंने राम और हनुमान की उपासना का प्रसार किया । अपने विचारों को दूर-दूर तक प्रचारित करने हेतु उन्होंने बहुत भ्रमण किया ।

परतंत्रता में स्वतंत्रता की प्रेरणा : शिवाजी महाराज से पूर्व समय में महाराष्ट्र में राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि स्थितियाँ सामान्य रूप से उपरोक्तानुसार थीं । इस कालखंड में महाराष्ट्र आदिलशाही आदि सत्ताओं के नियंत्रण में था । अत: महाराष्ट्र स्वतंत्र नहीं था । ऐसा होने पर भी कुछ लोग और कुछ विचारधाराएँ स्वतंत्रता के स्वप्न देख रहे थे। उनमें स्वराज्य के संकल्पना द्रष्टा माने जाने वाले शहाजी महाराज का स्थान अग्रणी था ।

स्वाध्याय

१. निम्न तालिका पूर्ण करो :

	गाँव/मौजा	कस्बा	परगना
किसे कहते हैं	------	-----	------
अधिकारी	------	-----	------
उदाहरण	------	-----	------

२. किसे कहते हैं ?

(१) बुद्रुक -

(२) परजा-पवन ....

(३) वतन - ....

३. ढूँढ़कर लिखो :

(१) कोकण के तटीय क्षेत्र में अफ्रीका से आए हुए लोग -

(२) अमृतानुभव ग्रंथ के रचनाकार -

(३) संत तुकाराम का गाँव -

(४) भारुड के रचनाकार -

(५) बल की उपासना का महत्त्व बतानेवाले -

(६) नारी संतों के नाम -

४. अपने शब्दों में जानकारी और कार्य लिखो :

(१) संत नामदेव (२) संत ज्ञानेश्वर

(३) संत एकनाथ (४) संत तुकाराम

५. जनता के लिए अकाल संकट क्यों अनुभव होता था ?

उपक्रम

(१) वारकरियों की दिंडी की आप किस प्रकार सहायता करेंगे; उसका नियोजन लिखो ।

(२) विविध संतों की वेशभूषा धारण करो और उनके भक्तिकाव्यों को प्रस्तुत करो ।

(३) पाठ में दी गई काव्य पंक्तियों को मराठी शिक्षक की सहायता से समझो ।